पूर्वमध्यकालीन उत्तर भारत में चिकित्सा– विज्ञान का विकास

डा0 धंनजय पाठक

गुप्त साम्राज्य जैसी केन्द्रियकृत शक्ति के पतन के बाद समस्त भारत में क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि सभी दृष्टिकोण से देश में कई विसंगतियाँ व्याप्त थी। इन संक्रमणकालीन विसंगतियों के बावजूद साहित्य–सृजन और विज्ञान, प्रौद्यौगिकी की दृष्टि से यह काल भारत का स्वर्णिम काल रहा है। प्रायः प्रत्येक राजवंश ने अपने आश्रय में कई साहित्यिक कृतियों के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। जिसके अतंर्गत संस्कृत, पाली, प्राकृत एंव अपभ्रंश साहित्य जैसे नूतन कृतियों का विकास हुआ।

पूर्वमध्यकाल में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक ढ़ाचें को लेकर कई ग्रन्थ लिखे गये। चिकित्सा विज्ञान के विकास के दृष्टिकोण से पूर्वमध्यकाल अत्यन्त निर्णायक काल रहा। सातवीं सदी के ग्रथंकार बाग्भट्ट ने ''अष्टांगह्रदय'' की रचना की, जिसे ''आयुर्वेद का ह्रदय'' कहा जाता है। यह संहिता चिकित्सा विज्ञान के व्यावहारिक रूप को प्रकट करती है। इसमें आयुर्वेद के दोनों ही प्रमुख संप्रदायों काय और शल्य चिकित्सा का वर्णन मिलता है। इसकी गणना वृहदत्रयी (चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांगह्रदय) में की जाती है। इस ग्रंथ का अरबी भाषा में अनुवाद बगदाद के खलीफा हारून अल रशीद ने करवाया था और बाद में इसका तिब्बती, जर्मन भाषा में अनुवाद भी हुआ।